INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 16 | ISSUE - 6 | JULY – 2026

रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति

प्रवीण कुमार सुपुत्र श्री विनोद कुमार
गांव कैरांवाली डॉ. माखोसरानी जिला सिरसा, हरियाणा.

शोध आलेख सार

राष्ट्रीय चेतना का अर्थ बहुत व्यापक है। इसमें राष्ट्र की पहचान की रक्षा, राष्ट्र पर गौरव, राष्ट्र का परिवेश, राष्ट्र का विकास और राष्ट्र के प्रति उसके नागरिकों की समग्र सोच और भावनाएँ शामिल हैं। विश्व की सभी भाषाओं के काव्य में राष्ट्रीय भावना का सदैव समावेश रहा है। राष्ट्रीय साहित्य में पूरे देश की चेतना का विकास होता है। राष्ट्रीय साहित्य राष्ट्रीय चेतना का सशक्त माध्यम है, जो समस्त राष्ट्र की मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति करता है। हमारे देश में वैदिक युग से ही साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का अंकन मिलता है। राष्ट्र की नींव का आधार समाज ही है। हिन्दी काव्य में राष्ट्रवाद की धारा का इतिहास अत्यंत दीर्घकालिक रहा है। इस धारा के प्रतिनिधि कवि के रूप में रामधारी सिंह 'दिनकर' प्रमुख हैं। दिनकर राष्ट्रीयता के स्थापित चिह्नों और निर्माण के मूल्यों के दोआब हैं। सचमुच यहीं से कोई कवि या चिंतक भारतीय राष्ट्रीयता को प्रकट कर सकता है।

रामधारी सिंह दिनकर

मूल शब्द– राष्ट्रीय, समाज, चेतना, नवजागरण, राष्ट्रीय काव्य।

प्रस्तावना

भारत के राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान, कवियों और लेखकों ने अपने लेखन के माध्यम से राष्ट्रीय काव्य की परंपरा को जारी रखा। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हिंदी के प्रथम ऐसे कवि थे जिन्होंने राष्ट्रीय चेतना का संचार किया। मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन, सोहनलाल द्विवेदी जैसे राष्ट्रप्रेमी कवियों ने अपने लेखन से राष्ट्रीयता की अलख जगाई और एक पूरे युग को प्रेरित किया। इस दौरान, रामधारी सिंह दिनकर, राम नरेश त्रिपाठी, सुभद्रा कुमारी चौहान, श्याम नारायण पांडे, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जैसे साहित्यकारों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में राष्ट्रीय भावना को अपनी रचनाओं का विषय बनाया और इसे चरम पर पहुँचाया। रामधारी सिंह दिनकर राष्ट्रवाद की कविता लिखने में अग्रणी थे। उनकी रचनाओं में विदेशी शासन के अत्याचारों का विरोध साफ दिखता है। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास को अपनी कविताओं में ऐसे उकेरा है कि उनमें इतिहास, वर्तमान की घटनाओं, परिवेश की गहरी समझ और भविष्य की दृष्टि का मिश्रण दिखता है। राष्ट्रीय आंदोलन की सफलताओं और विफलताओं, उत्साह, आशा और निराशा का स्पष्ट चित्रण उनकी कविताओं में मिलता है। कविवर दिनकर की ख्याति मुख्य रूप से एक राष्ट्रीय कवि के तौर पर रही है। राष्ट्र के बीते और वर्तमान हालातों के प्रति उनकी समझ बहुत तेज थी। उन्होंने स्वयं के व्यक्तित्व को राष्ट्रीय माहौल के साथ जोड़ लिया था। दिनकर ने अपनी कविताओं में निहित अनुभूतियों के बारे में इस तरह से कहा है,

"मेरी कविता के भीतर जो अनुभूतियाँ उतरी वे विशाल भारतीय जनता की अनुभूतियाँ थीं। वे उस काल की अनुभूतियाँ थीं, जिसके अंक में बैठकर मैं रचना कर रहा था। कवि होने की सामर्थ्य शायद मुझ में नहीं थी। यह क्षमता मुझ में भारतवर्ष का ध्यान करने से जागृति हुई। यह शक्ति मुझमें भारतीय जनता की आकुलता को आत्मसात् करने से स्फुटित हुई।"[1]

दिनकर जी ने मानवतावादी दृष्टिकोण का परिचय भी अपनी कविताओं में दिया, किंतु उस समय की परिस्थितियों ने उन्हें एक राष्ट्रवादी कवि के रूप में भी स्थापित कर दिया। 'दिनकर' की कविता ने भारतीय जनमानस में नई चेतना का संचार किया। उनकी कविता में राष्ट्रवाद कई स्तरों पर व्यक्त हुआ है। 'हुंकार', 'रेणुका', 'इतिहास के आँसू' जैसी कविताओं में 'दिनकर' जी ने विद्रोह और क्रांति की आवाज उठाई है। इन कविताओं में कर्म, उत्साह, शौर्य और उत्तेजना का संचार है। यह सब उस समय चल रहे राष्ट्रीय आंदोलन को आगे ले जाने में बहुत सहायक सिद्ध हुआ। दिनकर की कविताओं में, चाँद का कुर्ता, नमन करूँ मैं, सूरज का ब्याह, चूहे की दिल्ली यात्रा, कलम आज उनकी जय बोल, बालिका से बधू इत्यादि सैकड़ों ऐसी कविताएं हैं जो दिनकर की भारतीयता को राष्ट्रीयता तक लाती हैं। रामवृक्ष बेनीपुरी जी ने दिनकर के बारे में लिखा है, "हमारे क्रान्ति युग का सम्पूर्ण प्रतिनिधित्व इस समय दिनकर कर रहा है। क्रान्तिवादी को जिन–जिन हृदय मन्थनों से गुजरना होता है, दिनकर जी की कविता उसकी सच्ची तस्वीर रखती है।"[2]

दिनकर की कविताओं में राष्ट्रीय भावना सम्पूर्ण रूप में दिखाई पड़ती है। दिनकर पहले भारतीयता के कवि हैं जो बाद में राष्ट्रीयता के रूप में प्रतिष्ठित होते हैं। वे राष्ट्रीयता की आड़ में भारतीय नही, बल्कि उनकी भारतीयता राष्ट्रीयता के रूप में अपनी पहचान बनाती है। इसलिए उन्होंने उन सत्ताधारियों के खिलाफ निर्भीकता से लिखा है, जो राष्ट्रीयता के रंगे चोले में अराष्ट्रीयता को ढंके रहते हैं। जो जनता के जीवन से खिलवाड़ करते है, जिनके लिए लोकतंत्र मात्र एक दिखावे की वस्तु है, जो अपने सुख के लिए गरीबों का स्वाभिमान बेच देते हैं, जो देश की गरिमा की परवाह न करके सत्ता के लिए किसी भी स्तर तक गिर सकते हैं, जिन्होंने अपने लालच से देश को कत्लगाह में बदल दिया, जिन्होंने सरकार बचाने के लिए किसानों और मजदूरों के जवान बेटों को युद्धों में झोंक दिया हो– ऐसे राष्ट्रीयता के सौदागरों के लिए दिनकर की कविताएं आज भी करारे सांस्कृतिक तमाचे हैं। दिनकर ने बनावटी राष्ट्रवाद का चित्रण करते हुए अपनी रचना कुरूक्षेत्र में लिखा है,

"वह कौन रोता है वहां
इतिहास के अध्याय पर
जिसमें लिखा है नौजवानों के लहू का मोल है
प्रत्यय किसी बूढ़े कुटिल नीतिज्ञ के व्यवहार का
जिसका हृदय उतना मलिन जितना कि शीर्ष वलक्ष है
जो आप तो लड़ता नहीं,
कटवा किशोरों को मगर,
आश्वस्त होकर सोचता
शोणित बहा, लेकिन गई बच लाज सारे देश की?"[3]

यहां दिनकर ने युद्ध की राजनीति को भारतीयता की नजर से देखा है। वे राष्ट्रीयता को भारत की सांस्कृतिक परंपरा की विराट चेतना में देखते हैं। दिनकर की राष्ट्रीयता में अकर्मण्यता, भोगवाद, सामाजिक–आर्थिक असमानता, सांप्रदायिकता और ब्राह्मणवाद का विरोध स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। दिनकर की राष्ट्रीयता में कर्म के महत्व पर उतना ही जोर है जितना व्यक्ति के स्वाभिमान पर। साथ ही, दिनकर उस सामाजिक पीड़ा पर भी चोट करते हैं जो असमानता पर आधारित है और जिसमें व्यक्ति लाख प्रयासों के बाद भी स्थिति में बदलाव नहीं ला सकता। महिलाओं, दलितों, गरीबों और किसानों के प्रति संवेदनशीलता उनकी राष्ट्रवादी भावना की प्रमुख विशेषता है।

दिनकर का राष्ट्रीयता से ओतप्रोत पुनरुत्थानवादी नज़रिया न केवल सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में फैली हुई गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार और अस्पृश्यता जैसी विडंबनाओं, विसंगतियों और अंतर्विरोधों को दूर करने का काम करता है, बल्कि यह ब्रिटिश साम्राज्यवाद को भी जड़ से उखाड़ फेंकना

चाहता है। यह राष्ट्रीयता नर–नारी, युद्ध–प्रेम, प्रेम–सन्यास, संवेदना–विचार, कर्तव्य अधिकार, पूंजीवाद–समाजवाद, ऊँच–नीच, अमीर–गरीब के बीच समन्वय स्थापित करती है। यह देश की विविधता और सांस्कृतिक विरासत का जश्न मनाते हुए देशवासियों को एकता के सूत्र में बांधने का काम करती है। शिवकुमार मिश्र लिखते हैं "दिनकर की यह जन–पक्षधरता, देश मात्र के जन के प्रति है। वस्तुतः समूचे राष्ट्र को एक इकाई के रूप में सर्जक–माँ में सँजोये बिना, और इस एकात्म को जिए बिना न तो सही अर्थों में राष्ट्रीय चरित्र का कोई काव्य लिखा जा सकता है और न ही कोई राष्ट्रीय कवि के रूप में स्वीकृति पा सकता है। राष्ट्रीय कृतित्व का अर्थ ही है, वह कृतित्व जिसमें समूचे राष्ट्र की आत्मा की गूंज हो, जिसका संबोधन–उद्‌बोधन समूचे राष्ट्र के प्रति हो, जो समूचे राष्ट्र की आकांक्षाओं की प्रतिमूर्ति हो। राष्ट्रीय एकात्म का लक्ष्य, यदि वह अभी भी स्वप्न है, तो यह स्वप्न तभी साकार होगा जब देश का साधारण जन, मेहनत करने और अपना रक्त तथा पसीना बहाने वाले किसान मजदूर राष्ट्र के कर्णधारों, राष्ट्र के तंत्र के संचालकों, प्रभुवर्गों की संवेदना तथा चिंता के दायरे में आएंगे, राष्ट्र के जीवन में अपनी भागीदारी का अहसास करेंगे, प्रभु–वर्गों की कृपा पर आश्रित न होकर राष्ट्र की नियामक शक्ति बनेंगे। दिनकर ने ऐसा ही चाहा है। उनकी जनपक्षधरता उनकी इसी आकांक्षा की उपज है।"[4]

दिनकर जी ने अपने साहित्य में यह अनुभव कराया कि कविता में आज भी वह शक्ति मौजूद है जो अनैतिक–अत्याचार, शोषण–उत्पीड़न के खिलाफ आग उगल सकती है, भूचाल ला सकती है, सत्ता के मद में बेहोश राजनीतिक नेताओं की नींद हराम कर सकती है। राष्ट्र की वास्तविक शक्ति जनता है। अतः दिनकर ने ही जनता को राष्ट्र स्वामी स्वीकार किया और जन–विरोधी शक्तियों को चुनौती देते हुए कहा है।

"सदियों की ठंडी–बुझी राग सुगबुगा उठी,
मिट्टी सोने का ताज पहन इठलाती है;
दो राह समय के रथ का घर्घर–नाद सुनो,
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।"[5]

दिनकर का काव्य सामाजिक कुरीतियों और धार्मिक रूढ़ियों के खिलाफ मानवता का प्रतीक बनकर उभरा है। उनका काव्य हर प्रकार के अन्याय, अमानवीयता और अनीति के विरुद्ध विद्रोह की भावना से ओतप्रोत है। मनुष्य और मनुष्य के मध्य समस्त भेदों के प्रति घोर तिरस्कार, जाति, धर्म, लिंग, वर्ग, नस्ल तथा सम्प्रदाय की बेड़ियों का विरोध आदि दिनकर के भावनात्मक राष्ट्रवाद का आधार है।

निष्कर्ष–

संक्षेप में कहा जा सकता है कि दिनकर का काव्य राष्ट्रीय चेतनाओं से परिपूर्ण है। उनकी साहित्य यात्रा की शुरुआत राष्ट्रीय चेतना से संबंधित काव्य से होती है। उन्होंने अपनी कविताओं में राष्ट्रीय चेतना को विभिन्न संदर्भों में व्यक्त किया है। दिनकर की विचारधारा राष्ट्रवादी सोच के रूप में प्रख्यात है, जिसमें स्वदेश गौरव और स्वाभिमान की भावना समाहित है। वे गांधी जी के विचारों से प्रभावित होकर अपने राष्ट्रवाद को पुष्ट करने में सफल रहे हैं, लेकिन उनका राष्ट्रीवाद अहिंसा, विश्व प्रेम के साथ–साथ हिंसा का समर्थन करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

[1]कोयला और कवित्व रामधारी सिंह दिनकर पृष्ठ, 77
[2]रामवृक्ष बेनीपुरी, हुँकार की भूमिका, क्रान्ति का कवि, पृष्ठ, 2
[3]रामधारी सिंह दिनकर, कुरूक्षेत्र, प्रथम सर्ग, पृष्ठ–5
[4]शिवकुमार मिश्र, साहित्य, इतिहास और संस्कृति, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण प्रथम, पृष्ठ सं. 163–164
[5]रामधारी सिंह दिनकर, 'नील कुसुम', उदयाचल, पटना–1, पृष्ठ सं. 29